6. ज्योति जवाहर (श्री देवीप्रसाद शुक्ल 'राही')

प्रतापगढ़, रामपुर, गोंडा, कानपुर, ललितपुर जिलों के लिए निर्धारित खंडकाव्य। नव-निर्मित जिलों के विद्यार्थी अपने विषय-अध्यापक से अपने जिले में निर्धारित खंडकाव्य के विषय में निश्चित जानकारी प्राप्त कर लें।

प्रश्न–1 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के कथानक (कथा/कथावस्तु) का सार/सारांश लिखिए।

अथवा **'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य में कितने सर्ग हैं? उनके नाम लिखिए।**

अथवा **'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य की कथावस्तु जननायक नेहरू के विराट् व्यक्तित्व का अभ्युदय है।'' इस कथन की पुष्टि कीजिए।**

अथवा **'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के तृतीय सर्ग का कथानक संक्षेप में लिखिए।**

अथवा **'ज्योति जवाहर' के अंतिम सर्ग का कथानक लिखिए।**

अथवा **'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के आधार पर निम्नलिखित का संक्षिप्त परिचय दीजिए–सुभाषचंद्र बोस, सम्राट् अशोक।**

अथवा **'जवाहरलाल के व्यक्तित्व के निर्माण में संपूर्ण भारत का योगदान रहा है।' 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के आधार पर उपर्युक्त कथन को स्पष्ट कीजिए।**

अथवा **'' 'भारत' का खंड-खंड अपने अखंड-दिव्यरत्नों को नायक पर न्योछावर करने को आतुर है।'' इस कथन की पुष्टि 'ज्योति-जवाहर' खंडकाव्य के आधार पर कीजिए।**

अथवा **'ज्योति जवाहर' के आधार पर बताइए कि नेहरू के विराट् व्यक्तित्व को किन-किन व्यक्तियों/शक्तियों ने किस रूप में प्रभावित किया?**

अथवा **नेहरू के व्यक्तित्व के निर्माण में किन शक्तियों का योगदान था? 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के आधार पर संक्षेप में वर्णन कीजिए।**

उत्तर– देवीप्रसाद शुक्ल 'राही' द्वारा रचित '**ज्योति जवाहर**' खंडकाव्य एक भावप्रधान खंडकाव्य है। इस खंडकाव्य में राष्ट्रनायक जवाहरलाल नेहरू के जीवन की घटनाओं का उल्लेख किया गया है। इस खंडकाव्य का संक्षिप्त कथानक निम्नलिखित है–

पं. जवाहर लाल नेहरू का व्यक्तित्व सूर्य के समान तेजस्वी, चंद्रमा के समान सुंदर, हिमालय के समान स्वाभिमान से पूर्ण तथा सागर के समान गंभीर था। भारतवर्ष की इस मिट्टी में ही उनका लालन-पालन हुआ। नेहरू जी के महान् व्यक्तित्व में

संपूर्ण भारतीय संस्कृति के दर्शन होते थे। उन्होंने अनेक राज्यों के महान् पुरुषों के गुणों को अपने व्यक्तित्व में सँजोया। इन प्रांतों के सांस्कृतिक एवं सामाजिक गुणों का नेहरू के व्यक्तित्व में समावेश हुआ। कवि के अनुसार नेहरू जी के व्यक्तित्व में विभिन्न प्रांतों के गुणों का समावेश इस प्रकार हुआ—

गुजरात प्रदेश में उत्पन्न हुए **महात्मा गाँधी** से उन्होंने अहिंसा, सत्य, प्रेम तथा मानवता की पूजा का पाठ पढ़ा तथा **नरसी मेहता** की भक्तिमयी वाणी से हृदय की पवित्रता को समझा। गुजरात के ही वीर रस के कवि **पद्मनाथ** तथा **महर्षि दयानंद** की चारित्रिक विशेषताओं का भी नेहरू जी पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा।

महाराष्ट्र भी नेहरू जी को शिवा जी की तलवार देकर उनका अभिनंदन करता है। यह तलवार मातृभूमि की रक्षा का प्रतीक है। महाराष्ट्र का विश्वास है कि तलवार ही संकट के समय में देश की रक्षा कर सकती है। महाराष्ट्र नेहरू जी को **गुरु रामदास** की राष्ट्रीय चेतना, गीता के ज्ञान पर आधारित **ज्ञानेश्वर** का कर्मवाद तथा **तुकाराम** और **लोकनाथ** के गीतों का संकलन अर्पित करता है। इसी प्रकार महाराष्ट्र में उत्पन्न **लोकमान्य तिलक** का 'करो या मरो' का नारा नेहरू जी के हृदय में देश के प्रति लगन पैदा करता है। **केशव गुप्त** के ओजस्वी गीत उनके हृदय में नव-चेतना को जाग्रत करते हैं।

नेहरू जी ने **राजस्थान** के महान् पुरुषों से विपदाओं में विचलित न होने की प्रेरणा ली। उन्होंने राजस्थान से ही संघर्षों में जीना सीखा। राजस्थान की इस बंजर और ऊसर धरती ने अनेक अभावों को सहन करते हुए भी देश की मर्यादा की रक्षा की है। इस धरती में **राणा साँगा, चंदबरदाई, जयमल** आदि वीर पुरुष उत्पन्न हुए, जिनके शौर्य की छाप नेहरू जी के व्यक्तित्व पर पड़ी। राजस्थान वीर पुरुषों के लिए ही प्रसिद्ध नहीं हैं, अपितु यहाँ का स्त्री-वर्ग भी वीरता की भावना से ओत-प्रोत है। यहाँ की पन्ना धाय ने राज्यहित में अपनी कर्तव्यनिष्ठा का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करते हुए अपने एकमात्र पुत्र का भी बलिदान कर दिया। इसी प्रकार पतिव्रता नारी के महान् भारतीय आदर्श तथा अपनी आन-मान की रक्षा के लिए हजारों राजपूत क्षत्राणियों ने जौहर कर लिया। इसके अतिरिक्त योगिनी **मीरा** ने जनमानस में भक्ति की भावना को फैलाया। राजस्थान की इस वीर-भावना को देखकर सतपुड़ा राज्य भी मौन नहीं रहा है; वह भारत की अखंडता की घोषणा करता हुआ कहता है—

बूढ़ा सतपुड़ा लगा कहने, हूँ दूर मगर अलगाव नहीं।
कम हुआ आज तक उत्तर से, दक्षिण का कभी लगाव नहीं।।

सतपुड़ा की नर्मदा, ताप्ती, महानदी, कृष्णा और कावेरी नदियाँ भी नेहरू जी के दर्शनार्थ पूरब-पश्चिम में फैली हुई थी। नेहरू जी के दर्शन के लिए दक्षिणी भारत की प्रकृति बेचैन थी। **महावीर** और **गौतम** के जीवन और उपदेशों से ही उन्होंने मानव-धर्म को सीखा। **कंबन** की 'रामायण' से 'हिंदू-धर्म' का ज्ञान प्राप्त किया तथा **रामानुजाचार्य** और **शंकराचार्य** के दार्शनिक तत्वों से आत्मज्ञान प्राप्त किया। **सतपुड़ा-संत 'अप्पा'** के अहिंसावादी विचारों ने सतपुड़ा के साहित्य, कला और संगीत पर अपनी विशिष्ट छाप छोड़ी है। **कालिदास** की भावुकता, कुमारिल की अद्‌भुत प्रतिभा, **मोढ़ा** की व्याकुलता, अंगारों की भाषा वाला **फकीर मोहन** तथा अकबर से लड़ने वाली **चाँदबीबी** जैसी अनेक विभूतियों को भी सतपुड़ा ही अपने हृदय में सँजोए हुए है। हृदयगत इन विभूतियों को समग्र विशेषताओं को वह नेहरू जी को अर्पित कर देना चाहता है। सतपुड़ा की प्रतिमाओं में भारतीय संस्कृति जीवित है। **तंजौर** और **भुवनेश्वर** की प्रतिमाएँ नेहरू जी को आकर्षित किए बिना नहीं रहती। यहीं पर **तानसेन** की वीणा के स्वर भी सुनाई देते हैं।

बंगाल प्रांत भी अपने आपको नेहरू जी पर न्योछावर कर देना चाहता है। वह कहता है—

बंगाल लगा हल्ला करने, कंगाल नहीं मैं रत्नों का।
तेरे हित अभी सँजोए हूँ, अरमान न जाने कितनों का।।

बंगाल का वैभवशाली अतीत **चंडीदास** तथा **गोविंददास** के मधुर गीतों को हृदय में सँजोए हुए है। राधा की ममता जयदेव के गीतों से मिलती है। उनके छंदों के झुरमुट में गोपियों की व्याकुलता के दर्शन होते हैं। **कृतिवास** के द्वारा अनुदित रामायण और महाभारत तथ **चैतन्य महाप्रभु** की भक्तिमयी वाणी आदि नेहरू जी के चारित्रिक विकास में सहायक बने। दौलत काजी तथा शाह जफर ने भी बंगाल में ही गजलों की रचना की। नेहरू जी को **विवेकानंद** तथा **दीनबंधु** की कर्मठता ने बहुत अधिक प्रभावित किया। नेहरू जी को बंगाल प्रांत **बंकिमचंद्र** का राष्ट्रप्रेम, **टैगोर** तथा **शरत** की अमर कला और **सुभाष** की देशभक्ति आदि सब कुछ अर्पित कर देना चाहता है। वह कहता है—

अब जो-कुछ है, सब अर्पित है, आँसू, अंगारे और' पानी।
जीवन की लाज बचा लेना, गंगा-यमुना के वरदानी।।

आसाम अपनी प्राकृतिक सुषमा को उत्साहपूर्वक नेहरू जी पर न्योछावर कर देना चाहता है। आसाम के **माधव कंदली** ने रामायण का अनुवाद किया है तथा **मनसा** नामक भक्तकवि के गीतों ने मन को शुद्धता प्रदान की है। **गुरु शंकर** ने साहित्य, कला तथा संस्कृतियों का निर्माण किया है। वैष्णव मठ की दीवारों पर निर्मित **'चरितपुथी'** ने जन-जन को मानवता के मंत्र का पाठ पढ़ाया। आसाम की घाटियों में संगीत गूँज रहा है तथा हरियाली जवाहरलाल जी के स्वागत के लिए पलकें बिछाए बैठी है। आसाम हृदय से नेहरू जी का स्वागत करना चाहता है। वह कहता है—

मेरी हर धड़कन प्यासी है, तेरे चरणों के चुंबन को।
होती तैयार खड़ी है रे, जन-मन के स्नेह समर्पण को।।

बिहार गौतम की भूमि है। इस प्रांत में करुणा के स्वर व्याप्त है। यह सत्य,अहिंसा, दया, क्षमा आदि का नंदन वन है। तीर्थकर महावीर की विभूति **वैशाली**; नेहरू जी को मानवीय गुणों के मोती अर्पित करती हुई कहती है—

फिर भी दर्शन के कुछ मोती, इस आशा से ले आई हूँ।।
मोती की लाज न जाएगी, 'मोती' के द्वारे आई हूँ।।

समुद्रगुप्त की यशोगाथा आज भी धूमिल नहीं हुई। समुद्रगुप्त के पुत्र **चंद्रगुप्त** ने भी अपनी वीरता से भारत का मस्तक झुकने नहीं दिया। कलिंग-विजय के पश्चात **अशोक** वैराग्य भावना से ओत-प्रोत हो गया। बिहार प्रांत की ये समस्त घटनाएँ नेहरू जी के व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं। वैदिक युग की संस्कृति के विकास में **पुष्यमित्र शुंग** का अपूर्व योगदान रहा। बिहार **पतंजलि** के चिंतन, बौद्धिक संस्कृति, साहित्य आदि को नेहरू जी के अभिनंदन में अर्पित करना चाहता है।

मंदिर के समान पवित्र **उत्तर प्रदेश**, जिसके आँगन में नेहरू जी का बाल्यकाल बीता, अपने आपको धन्य कहने लगा। मथुरा, वृंदावन, अवधपुरी, तुलसीकृत, 'श्रीरामचरितमानस' के उपदेश, सारनाथ में गौतम के उपदेश,मगहर के कबीर द्वारा जाति-पाँति खंडन के दोहे तथा बदरीनाथ व केदारनाथ के तीर्थस्थल आदि के द्वारा उत्तर प्रदेश नेहरू जी का अभिनंदन करता है। रानी लक्ष्मीबाई की वीरता ने भी नेहरू जी को प्रभावित किया है।

पंजाब भी अपने गौरवमयी परंपरा के द्वारा नेहरू जी का स्वागत करता है। पंजाब स्थित जलियाँवाला बाग अपनी करुण गाथा से नेहरू जी के हृदय में नव-चेतना का संचार करता है। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की सभ्यता का इतिहास तथा गुरुनानक की वाणी आदि को लेकर पंजाब प्रांत नेहरू जी के समक्ष श्रद्धा से शीश झुकाता है।

तभी **कश्मीर** नेहरू जी पर पुष्पों की वर्षा करता है। कश्मीर का सौंदर्य नेहरू जी के हृदय को आकर्षित करता है।

कुरुक्षेत्र नेहरू जी को अर्जुन की संज्ञा देता है तथा अर्जुन का गांडीव उठवाकर दुर्योधन जैसे अत्याचारी व्यक्तियों को समाप्त करने का आदेश देता है।

दिल्ली अपने घायल इतिहास का स्मरण कराती है। दिल्ली उन्हें बाबर की भीषणता तथा शेरशाह की कट्टरता नहीं देना चाहती। वह अकबर के राज्य से प्रभावित है और हिंदु मुस्लिम एकता की नीति को नेहरू जी को समर्पित करना चाहती है। दिल्ली उन्हें **जहाँगीर** का न्याय तथा **शाहजहाँ** की कलात्मक सौगात 'ताजमहल' को अर्पित करती है। मुगलों के अंतिम बादशाह **बहादुरशाह जफर** का बलिदान नेहरू जी को भाव-विभोर कर देता है। सूने हृदयवाला **लालकिला** प्रसन्नतापूर्वक संगम के राजा जवाहरलाल पर सबकुछ अर्पित कर देना चाहता है।

वास्तव में संपूर्ण भारत ने जवाहरलाल को अपनी सभी निधियाँ अर्पित की हैं। इसलिए यह कथन भी पूर्णत: उपयुक्त ही है कि'' 'ज्योति जवाहर' के नायक के व्यक्तित्व के निर्माण में पूरे भारत का योगदान रहा है।'' जवाहरलाल के नेत्रों में भारत को देखता हुआ कवि कहता है—

जब लगा देखने मानचित्र, भारत न मिला तुमको पाया।
जब तुमको देखा नयनों में, भारत का चित्र उभर आया।।

प्रश्न–2 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के आधार पर जवाहरलाल नेहरू का चरित्र-चित्रण कीजिए।
***अथवा* 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि जवाहरलाल नेहरू के आदर्श विचार एवं आदर्श क्या थे?**

अथवा 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य का नायक कौन है? उस (जवाहरलाल नेहरू) के चरित्र की प्रधान चार विशेषताएँ लिखिए।

अथवा 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के जननायक/चरित्र नायक/प्रधान पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के आधार पर जवाहरलाल नेहरू की प्रबल लोकप्रियता के कारणों पर प्रकाश डालिए।

अथवा 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के आधार पर पं.जवाहरलाल नेहरू का चरित्र-चित्रण आधुनिक भारत के निर्माता एवं देश-प्रेमी के रूप में कीजिए।

अथवा मुझमें कोमलता है लेकिन कायरता मेरा मर्म नहीं।
बैरी के सन्मुख झुक जाना मेरे जीवन का धर्म नहीं।।
– 'ज्योति जवाहर' में व्यक्त उक्त भावों के आधार पर नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा '' 'ज्योति जवाहर' के नायक के चरित्र में राष्ट्रीयता एवं मानवीय चेतना का अद्‌भुत संगम है।'' इस कथन की पुष्टि कीजिए।

अथवा 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के आधार पर नेहरू जी के व्यक्तित्व पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

अथवा 'सूरज से लेकर ज्योति, चाँद से लेकर सुधराई तक की।
हिमगिरी से लेकर स्वाभिमान, सागर से गहराई मन की।।'
– उक्त पंक्तियों को ध्यान में रखते हुए 'ज्योति जवाहर' के नायक की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

अथवा ''अत्याचारी के चरणों पर
झुक जाना भारी हिंसा है।
पापी का शीश कुचल देना
जी, हिंसा नहीं अहिंसा है।''
–'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य की उपर्युक्त पंक्तियों को ध्यान में रखते हुए अहिंसा के विषय में अपना मत व्यक्त कीजिए।

अथवा 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के आधार पर जवाहरलाल नेहरू के राष्ट्र-प्रेम का वर्णन कीजिए।

अथवा 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के नायक में देश-प्रेम, विश्व-बन्धुत्व, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा राष्ट्रीय भावनात्मक एकता के समन्वित दर्शन होते हैं।'' इस कथन की पुष्टि संक्षेप में कीजिए।

उत्तर– श्री देवीप्रसाद शुक्ल 'राही' द्वारा रचित 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के नायक पं.जवाहरलाल नेहरू हैं। जवाहरलाल नेहरू को प्रस्तुत खंडकाव्य में युगावतार तथा लोकनायक के रूप में चित्रित किया गया है। उनकी चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख इस प्रकार किया जा सकता है–

1. देशभक्त तथा स्वतंत्रता के पुजारी– उच्चकुल में उत्पन्न होने पर भी जवाहरलाल नेहरू ने देश की स्वतंत्रता के लिए अनेक कष्टों को सहन किया। उनका जीवन वीर शिवाजी, राणा प्रताप आदि वीरों के चरित्र से प्रभावित हुआ था। वे सच्चे देशभक्तों के समान संघर्षमय जीवन व्यतीत करना जानते थे–

संघर्षों में पैदा होना, संघर्षों में जीना-मरना।
जिनके आगे बाधाओं को, हरदम पड़ता पानी भरना।।

2. महान् व्यक्तित्व– जवाहरलाल नेहरू के लिए विराट् व्यक्तित्व में सूरज का तेज, चाँद की सुघड़ता, सागर की गहराई तथा धरती का धैर्य था। वे भारत के भाग्य-निर्माताओं में से थे। भारत के राष्ट्रभक्तों की शृंखला में उनका नाम अमर है।

3. सर्वप्रिय लोकनायक– जवाहरलाल नेहरू को भारतीय जनता ने असीम प्यार दिया। कवि ने जवाहरलाल को युगावतार तथा लोकनायक के रूप में स्वीकार किया है। लोकनायक वही हो सकता है, जिसके हृदय में संपूर्ण जनता के सुख-दु:ख की अनुभूति हो। भारतवर्ष का कोई ऐसा प्रांत नहीं, जिसने जवाहरलाल नेहरू पर अपना सर्वस्व न्योछावर न किया हो। गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल, उत्तर प्रदेश, दिल्ली आदि सभी प्रांतों के कोने-कोने में लोकनायक का विराट् व्यक्तित्व व्याप्त है। नेहरू जी को युगावतार मानते हुए कवि ने इस प्रकार कहा है–

मथुरा वृंदावन अवधपुरी की, गली-गली में बात चली।
फिर नया रूप धर कर उतरा, द्वापर त्रेता का महाबली।।

4. भारतीय संस्कृति के पोषक– जवाहरलाल नेहरू के चरित्र पर भारतवर्ष के प्राचीन गौरव की छाप है। उन्होंने महावीर, गौतम तथा महात्मा गाँधी द्वारा अपनाई गई अहिंसा की नीति का पालन किया। वे गाँधी जी के स्वप्नों का भारत बनाने में ही जीवनभर तल्लीन रहे। भारतवर्ष के शंकराचार्य, रामानुजाचार्य आदि महान् दार्शनिकों की वाणी को उन्होंने ध्यानपूर्वक सुना। भारतीय साहित्यकारों कालिदास, भवभूति आदि तथा भारतवर्ष के शीर्षस्थ नेता अकबर, चाँदबीबी, सुभाषचंद्र बोस, टीपू आदि के चरित्रों का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

5. राष्ट्रोत्थान के पक्षपाती– जवाहरलाल नेहरू ने स्वतंत्र भारत का नव-निर्माण किया। उन्होंने भारतवर्ष को स्वावलंबी राष्ट्र बनाने का भरसक प्रयास किया। पंचवर्षीय योजनाओं के आधार पर उन्होंने भारत का निरंतर उत्थान किया। राष्ट्रीय उत्पादन में उनकी अत्यधिक रुचि थी।

इस प्रकार 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य में जवाहरलाल नेहरू का व्यक्तित्व समग्र भारतीयता और उसके प्राकृतिक सौंदर्य को समाहित किए हुए है, जिसको कवि ने इन शब्दों में व्यक्त किया है–

सूरज से लेकर ज्योति, चाँद से लेकर सुधराई तन की।
हिमगिरि से लेकर स्वाभिमान, सागर से गहराई मन की।।

6. युद्ध-विरोधी– जवाहरलाल भी अशोक के समान युद्ध विरोधी थे। वे अहिंसा के पुजारी थे, किंतु उनकी अहिंसा की परिभाषा सर्वथा भिन्न थी। वे अत्याचार, शोषण और स्वाभिमान पर आघात होते हुए भी चुपचाप रहने को अहिंसा नहीं मानते थे। उनकी दृष्टि में यह अहिंसा नहीं, बल्कि कायरता थी। वे अत्याचारी के सामने झुक जाने को हिंसा और पापी का सिर काट देने को अहिंसा मानते थे। इसका उल्लेख कवि ने इस प्रकार किया है–

अत्याचारी के चरणों पर
झुक जाना भारी हिंसा है।
पापी का शीश कुचल देना
जी, हिंसा नहीं अहिंसा है।

7. विश्व-शांति के अग्रदूत– जवाहरलाल आजीवन विश्व-शांति की स्थापना के कार्य में लगे रहे। उनके द्वारा निर्धारित तटस्थता, निरस्त्रीकरण, पंचशील आदि की नीति शांति-स्थापना से संबंधित प्रयासों के ही उदाहरण हैं, जिनके लिए वे अंत तक प्रयास करते रहे।

8. नवराष्ट्र के निर्माणकर्ता– भारतवर्ष को स्वतंत्रता दिलाने के पश्चात् नवराष्ट्र का निर्माण करने वालों में जवाहरलाल नेहरू अग्रगण्य हैं। देश का उद्धार करने के लिए उन्होंने पंचवर्षीय योजनाओं को आरंभ किया। गुट-निरपेक्षता, निरस्त्रीकरण तथा विश्व-शांति की स्थापना आदि कार्यों के फलस्वरूप उनका व्यक्तित्व चमक उठा। वे जाति-पाँति के बंधनों को तोड़ने में विश्वास रखते थे। जवाहरलाल नेहरू सभी धर्मों की एकता में विश्वास रखकर देश को निरंतर प्रगतिशील बनाना चाहते थे।

अत: हम कह सकते हैं कि उनका व्यक्तित्व एक राष्ट्रप्रेमी, मानवतावादी, युद्ध-विरोधी, सत्य एवं अहिंसा के पुजारी तथा महान् लोकनायक के रूप में उभरकर सामने आया है। उनका व्यक्तित्व संपूर्ण भारतीय संस्कृति का परिचायक है; इसीलिए कवि उनके व्यक्तित्व में ही संपूर्ण भारत की छवि पा जाता है–

जब लगा देखने मानचित्र भारत न मिला तुमको पाया।
जब तुमको देखा नयनों में भारत का चित्र उभर आया।।

प्रश्न–3 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य का कथानक देश की विभिन्नताओं के बीच अभिन्नता की एक शाश्वत कड़ी के रूप में उभरकर सामने आता है।" इस कथन की पुष्टि कीजिए।

***अथवा* सिद्ध कीजिए कि 'ज्योति जवाहर' राष्ट्रीय एकता की भावनाओं से ओत-प्रोत है।**

***अथवा* 'ज्योति जवाहर' राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने वाला काव्य है। सोदाहरण सिद्ध कीजिए।**

***अथवा* 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के आधार पर जवाहरलाल नेहरू के भावनात्मक एकतामूलक विचारों की पुष्टि कीजिए।**

अथवा **'ज्योति जवाहर' का कथानक घटनाप्रधान न होकर भावप्रधान है।''इस कथन का क्या अभिप्राय है?**

अथवा **'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के प्रतिपाद्य विषय पर प्रकाश डालिए।**

अथवा **'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।**

अथवा **'ज्योत जवाहर' की रचना राष्ट्रीय एकता की भावना की पुष्टि हेतु की गई है।'' इस कथन की सत्यता सिद्ध कीजिए।**

अथवा **'' 'ज्योति जवाहर' में राष्ट्रीय एकता को महत्वपूर्ण स्थान मिला है।'' इस कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।**

अथवा **'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य में व्यक्त राष्ट्रीय भावना/एकता पर प्रकाश डालिए।**

अथवा **'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य' भावप्रधान और सर्वथा मौलिक काव्य है' स्पष्ट कीजिए।**

अथवा **'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के आधार पर सिद्ध कीजिए कि पं. नेहरू के व्यक्तित्व में भारतीय संस्कृति अपनी भावात्मक एकता के साथ मुख हो उठी है।**

अथवा **'बूढ़ा सतपुड़ा लगा कहने, हूँ दूर मगर अलगाव नहीं।**
कम हुआ आज तक उत्तर से, दक्षिण का कभी लगाव नहीं।।'
– 'ज्योति जवाहर' से उद्धृत उक्त पंक्तियों के आधार पर खंडकाव्य में वर्णित राष्ट्रीय एकता पर प्रकाश डालिए।

अथवा **'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य का संदेश स्पष्ट कीजिए।**

अथवा **'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य की प्रभावकारिता पर प्रकाश डालिए।**

उत्तर– 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य में श्री देवी प्रसाद शुक्ल 'राही' ने लोकनायक जवाहरलाल नेहरू के व्यक्तित्व को भावात्मक एकता का प्रतीक मानते हुए प्रस्तुत खंडकाव्य का सृजन किया है। भारतवर्ष के गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों के गौरव का वर्णन भी कवि ने भावात्मक एकता की दृष्टि से ही किया है। ये सभी राज्य भारतवर्ष की महिमा को ही व्यक्त करते हैं। इस भावना को व्यक्त करते हुए कवि ने लिखा है—

माथे पर टीका लगा दिया, हल्दी की घाटी ने
जो मंत्र दिया मर मिटने का, आजादी की परिपाटी ने।
बूढ़ा सतपुड़ा लगा कहने, हूँ दूर मगर अलगाव नहीं
कम हुआ आज तक उत्तर से, दक्षिण का कभी लगाव नहीं।।

स्पष्ट है कि कविवर राही ने प्रस्तुत खंडकाव्य में मुख्य रूप से नेहरू के भावात्मक व्यक्तित्व का चित्रण किया है। इस चित्रण में उन्होंने भारतवर्ष की भावात्मक एकता को मनोहारी रूप में प्रस्तुत किया है। कवि का प्रतिपाद्य विषय यही है।

इस संदर्भ में कविवर देवीप्रसाद शुक्ल 'राही' ने प्रस्तुत खंडकाव्य की भूमिका में स्पष्ट रूप से लिखा है— ''जो लोग पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण का प्रश्न उठाकर जाति, भाषा, सम्प्रदाय और रीति-रिवाज की संकुचित मनोवृत्ति के आधार पर अलगाव और विघटन की बातें करते हैं, वे यह भूल जाते हैं कि भारतवर्ष की सांस्कृतिक एकता सदियों से अपनी अखंडता का उद्घोष करती हुई, समानताओं एवं विषमताओं की चट्टानों को तोड़ती हुई निरंतर आगे बढ़ती जा रही है।''

इस खंडकाव्य में कवि नेहरू के भावात्मक व्यक्तित्व का चित्रण करते हुए, भारत की राष्ट्रीय एकता पर आधारित चिरकालीन भावना को स्पष्ट करना चाहते हैं। इस प्रकार कवि ने नेहरू के व्यक्तित्व में राष्ट्रीय भावात्मक एकता तथा उनके केंद्रीय स्वरूप का समायोजन किया है। कवि को इस प्रयत्न में पूर्ण सफलता भी प्राप्त हुई है।

कवि के कथनानुसार खंडकाव्य की कथा लौकिकता की भावभूमि पर अवतरित होकर राष्ट्र की उन उपलब्धियों को आत्मसात् करती हुई आगे बढ़ती है, जो विभिन्न प्रकार की भौगोलिक जलवायु, रहन-सहन, आचार-विचार और भाषा की विभिन्नताओं के बाद भी समग्र राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधे हुए है तथा राष्ट्रीय एकता के प्रतीक लोकनायक पं. नेहरू के व्यक्तित्व में तिरोहित हो जाती है। 'ज्योति जवाहर' में राष्ट्रीय एकता की भावना पग-पग पर व्यक्त हुई है और खंडकाव्य का कथानक; देश की विभिन्नताओं के बीच अभिन्नता की एक शाश्वत कड़ी के रूप में उभरकर सामने आया है। इस प्रकार 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य राष्ट्रीय भावात्मक एकतामूलक खंडकाव्य है।

प्रश्न–4 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के आधार पर कलिंग युद्ध का वर्णन कीजिए।

***अथवा* 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य में वर्णित कलिंग युद्ध का अशोक के हृदय पर पड़े प्रभाव का निरूपण कीजिए।**

उत्तर– श्री देवीप्रसाद शुक्ल 'राही' द्वारा रचित खंडकाव्य 'ज्योति जवाहर' के अनुसार कलिंग-युद्ध सम्राट अशोक के शासनकाल में हुआ। भारतवर्ष में कलिंग युद्ध अत्यधिक भयानक युद्धों में गिना जाता है। इस विनाशकारी युद्ध में रक्त की नदियाँ बह गईं, जिनमें सैनिक मछलियों के समान तैरते दिखाई देते थे। इस युद्ध में अस्त्र-शस्त्रों की भयंकर टंकार सुनाई पड़ती थी। चारों ओर त्राहि-त्राहि मची थी। नरमुंड कट-कटकर गिर रहे थे। न जाने कितनी माताओं की गोद सूनी हो गई और अगणित नारियों की मांग का सिंदूर पौंछ दिया गया था। असंख्य बहनें अपने भाईयों की मृत्यु देखकर छाती पीट-पीटकर रो रही थीं। इस प्रकार के भयानक दृश्य को देखकर सभी का हृदय चीत्कार कर उठा था। कलिंग युद्ध वास्तव में बड़ा भीषण युद्ध था।

जब अशोक ने कलिंग में रक्तपात होते देखा तो उसका हृदय द्रवित हो उठा और वह हिंसा का परित्याग करके अहिंसक बन गया। कलिंग-युद्ध में हुए भीषण नरसंहार को अशोक के नेत्र न देख सके। उसका वज्र जैसा हृदय पिछल उठा। वह सोचने लगा कि उसके संकेत पर कितने ही निरपराध व्यक्ति क्षणभर में मौत के मुख में चले गए। अशोक विचलित हो उठा। उसे अपना विशाल साम्राज्य भी फीका लगने लगा। इस संदर्भ में कवि ने अशोक की मनोदशा का वर्णन इस प्रकार किया है—

सोने चाँदी का आकर्षण, अब उसे घिनौना लगता था।
साम्राज्यवाद का शीशमहल, कुटिया से बौना लगता था।।

कलिंग-युद्ध के उपरांत अशोक पूर्णतया अहिंसक बन गया। इस युद्ध ने उसके हृदय को आहत कर दिया था—

जाने कैसी थी कचोट, दिन रहते जिसने जगा दिया।
हिंसा की जगह अहिंसा का, अंकुर अंतर में उगा दिया।।

अशोक ने तलवार फेंकते हुए कभी युद्ध न करने की प्रतिज्ञा ली। वह गौतम बुद्ध का अनुयायी होकर बौद्ध भिक्षुक बन गया। इस स्थिति का चित्रण कवि ने इस प्रकार किया है—

जो कभी न हारा औरों से, वह आज स्वयं से हार गया।
भिक्षुक अशोक राजा अशोक, से पहले बाजी मार गया।।

प्रस्तुत खंडकाव्य में कलिंग-युद्ध का उल्लेख हिंसा और युद्ध के प्रति अशोक के वैराग्य और नेहरू के विचारों पर उस वैराग्य के प्रभाव को चित्रित करने के लिए हुआ है।

प्रश्न–5 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के शीर्षक की सार्थकता पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर– 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य में कवि 'राही' ने बताया है कि भारत की वैविध्यपूर्ण संस्कृति ने किस प्रकार पं. जवाहरलाल नेहरू के महान् व्यक्तित्व का निर्माण किया और फिर किस प्रकार से नेहरू जी ने भारत का नव-निर्माण करते हुए उसे एक ज्योति पुंज के रूप में नई दिशा और पहचान दी। नेहरू जी के चरित्र और व्यक्तित्व को अतिशयता प्रदान करते हुए कवि ने भारत और नेहरू जी को एक-दूसरे के पर्याय के रूप में प्रस्तुत करते हुए कहा है—

जब लगा देखने मानचित्र, भारत न मिला तुमको पाया।
जब तुमको देख नयनों में, भारत का चित्र उभर आया।।

कवि ने भारत की राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक विरासत का गुणगान नेहरू जी के ज्योतिस्वरूप भावात्मक व्यक्तित्व के आलोक में किया है, जिसमें उसे पूर्ण सफलता भी प्राप्त हुई है; अत: उन्हीं ज्योतिस्वरूप जवाहरलाल नेहरू के नाम पर इस खंडकाव्य का नामकरण सर्वथा सार्थक और औचित्यपूर्ण ही है।

प्रश्न–6 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य में प्रमुख रसों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर– श्री देवीप्रसाद शुक्ल 'राही' द्वारा रचित 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य का प्रमुख रस 'शांत' है। यत्र-तत्र अन्य रसों का भी प्रयोग किया गया है, किंतु उनकी प्रस्तुति गौण ही है। उदाहरणस्वरूप- कलिंग युद्ध के विवरण में बीभत्स, अशोक की मानसिक स्थिति प्रदर्शित करने में करुण तथा लोकमान्य तिलक, शिवा जी, राणा साँगा आदि से संबंधित विवरणों में वीर आदि रसों की निष्पत्ति हुई है। वस्तुत: इस खंडकाव्य में नेहरू के व्यक्तित्व पर इन विभिन्न रसों से युक्त विवरणों का प्रभाव दिखाया गया है।